5

मसीही व्यक्ति को ''केवल'' जो करना है

(फिलिप्पियों 1:27-30)

क्या आप कभी उन प्रचारकों और सिखाने वालों से उकताएं हैं जो आपको बताते हैं कि मसीही के रूप में आपको यह या वह करना आवश्यक है? क्या आप भक्तिपूर्ण जीवन जीने, दूसरों की सहायता करने, परमेश्वर की आराधना करने और दूसरों को सिखाने की शिक्षा सुन-सुनकर कभी तंग पड़े हैं? क्या आपने कभी चाहा है कि यीशु के पीछे चलने की शर्तों को केवल कुछ शब्दों में संक्षिप्त कर दिया जाए? यदि हां तो दिल थाम लें, क्योंकि पौलुस ने फिलिप्पियों 1:27 में यही किया:

> केवल इतना करो कि तुम्हारा चाल-चलन मसीह के सुसमाचार के योग्य हो कि चाहे मैं आकर तुम्हें देखूं, चाहे न भी आऊं, तुम्हारे विषय में यह सुनूं कि तुम एक ही आत्मा में स्थिर हो, और एक चित्त होकर सुसमाचार के विश्वास के लिए परिश्रम करते रहते हो।

इस आयत में अनुवादित शब्द ''केवल'' यूनानी विशेषण *monon* से लिया गया है। इस शब्द का अर्थ ''केवल, मात्र ... कार्य या स्थिति की क्रिया द्वारा दिए गए तक सीमित करना'' है।[1] गेरल्ड हाथोर्न ने इस शब्द का इस्तेमाल ''केवल और सदैव''[2] के रूप में किया और टिप्पणी की, ''पौलुस विशेषण *monon* के साथ इस नये भाग का परिचय देता है। ... ऐसा करके वह ज़ोर देता है कि ... मसीही व्यक्ति के लिए ... 'एक आवश्यक बात' मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जीना है।''[3] अपने अनुवाद में विलियम बार्कले ने इस शब्द का विस्तार ''एक बात जो तुम्हें ध्यान रखनी है'' के अर्थ में किया और फिर अपने नोट्स में यह टिप्पणी जोड़ दी: ''एक बात आवश्यक है-चाहे जो भी हो जाए ... फिलिप्पियों को जीवन अपने विश्वास और कार्य के योग्य जीवन जीना चाहिए।''[4]

अन्य लेखकों ने *monon* के इस विचार के साथ सहमति जताई। एलेस मोटायर ने लिखा है, '' 'केवल' शब्द का बल ज़बर्दस्त है, जैसे पौलुस ने कहा हो, 'यह एक बात और केवल यही।' उन्हें इस बड़े उद्देश्य से कोई और चीज़ हटाए या उनका ध्यान न फेरे; यह उनका सबसे प्रिय कार्य हो।''[5] चार्ल्स अर्डमन ने लिखा है, ''मसीही व्यक्ति के लिए उसके जीवन का नियम या कानून यह है कि वह 'मसीह के सुसमाचार के योग्य' हो।''[6]

एक अर्थ में पौलुस ने प्रभु के विश्वासी अनुयायी होने में शामिल सब बातों को लिया और उन्हें इस में संक्षिप्त कर दिया: '''केवल' करने वाली बात यह है कि तुम्हारा 'व्यवहार मसीह के सुसमाचार के अनुसार हो।''' तो क्या हम यह कहें कि ''शाबाश, अब मुझे उन सब बातों की कोई परवाह करने की आवश्यकता नहीं है, जो प्रचारक बताते हैं?'' नहीं। पौलुस की बात में अर्थ है पर उससे वह कहलवाने की कोशिश न करें, जो कहने का उसका इरादा नहीं था।

पवित्र शास्त्र में समय-समय पर कई बातों को परमेश्वर की संतान को अपने स्वर्गीय पिता की ज़िम्मेदार बताने के लिए संक्षिप्त किया जाता है। उदाहरण के लिए, पुराने नियम में मीका ने लिखा, ''और यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है, कि तू न्याय से काम करे और कृपा से प्रीति रखे और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले?'' (मीका 6:8)। क्या परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई मीका की बात का अर्थ यह है कि इस्राएली छह सौ से अधिक अन्य नियमों को भूल सकते हैं, जो रब्बियों ने मूसा की व्यवस्था में पाए थे? कदापि नहीं। उसी व्यवस्था की बात करते हुए (मत्ती 5:17, 18), यीशु ने कहा था, ''जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े , और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा'' (मत्ती 5:19क)।

मसीह ने स्वयं व्यवस्था के सार को कुछ ही शब्दों में संक्षिप्त कर दिया, ''तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख'' (मत्ती 22:37-39)। क्या इसका अर्थ यह था कि उसके सुनने वाले परमेश्वर की बाकी सब बातों को नज़रअंदाज़ कर देते? नहीं। यीशु की बातों को परमेश्वर और मनुष्य के साथ किसी के सम्बन्धों पर दी गई सभी आज्ञाओं को संक्षिप्त करते हुए व्यापक थी। यदि आप मत्ती 22:37-39 के नियम को मानते हैं तो आप प्रभु की *हर* आज्ञा को मानने के लिए पूरी कोशिश करेंगे (देखें मत्ती 7:21-23; यूहन्ना 14:15; इब्रानियों 5:9; 1 यूहन्ना 5:3)।

फिर से फिलिप्पियों 1:27 को देखें। पौलुस इस पर चर्चा कर रहा था कि वह जीवित रहेगा या मर जाएगा, यानी वह फिलिप्पियों को दोबारा देख पाएगा या नहीं (1:21-27)। फिर वह ध्यान अपनी स्थिति से दूसरों की स्थिति की ओर ले जाता है। एक अर्थ में उसने कहा, ''मुझे तुम्हारे पास शीघ्र आने की उम्मीद है, पर मैं ऐसा कर पाऊं या नहीं, मैं तुम से एक बात चाहता हूं: 'तुम्हारा व्यवहार मसीह के सुसमाचार के अनुसार हो।' '' मुझे प्रेरित का कम शब्दों में बड़ी बात कहना अच्छा लगता है। इसके साथ ही उसके शब्दों को सामान्य अर्थ में नये नियम की शिक्षा को कम करने के लिए इस्तेमाल न किया जाए। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि कुछ टीकाकार ऐसा ही करते हैं। वास्तव में वे कहते हैं, ''डॉक्ट्रिन, नैतिक मापदण्डों और ऐसे विषयों पर बाइबल की शिक्षा की चिन्ता न करें। तुम *केवल* वही करो जो पौलुस ने यहां कहा है।'' इस निष्कर्ष पर पहुंचने वाले लोग पवित्र शास्त्र को अलग करने के दोषी हैं। फिलिप्पी के लोगों ने ये बातें पढ़कर क्या आपको लगता है कि उत्तर दिया, ''बहुत बढ़िया! अब हमें पौलुस की किसी और बात को सुनने की आवश्यकता नहीं है''? पौलुस और फिलिप्पी दोनों ऐसे सुझाव से घबरा गए।

मीका 6:8 और मत्ती 22:37-39 के शब्दों की तरह पौलुस के ये शब्द भी व्यापक हैं। जो लोग सुसमाचार की इच्छा के योग्य जीवन जीने के लिए अपने आप को देते हैं, वे प्रभु की हर आज्ञा को मानने के लिए पूरा ज़ोर लगा देते हैं (देखें फिलिप्पियों 2:12क)। फिलिप्पियों 1:27-30 के इस अध्ययन में और खोज करते हुए हम ईश्वरीय आवयकताओं की उन में से कुछ बातों का अध्ययन करेंगे। उन पर चर्चा करते हुए याद रखें कि वे उस '' 'केवल' का भाग है, जो मसीही को करना है।''

व्यक्तित्व में विलक्षण (1:27क)

आइए और जांचते हुए आरम्भ करते हैं कि पौलुस के कहने का क्या अर्थ था कि ''तुम्हारा चाल-चलन मसीह के सुसमाचार के योग्य हो।'' प्रेरित ने ''तुम्हारा चाल-चलन'' कहकर एक असामान्य यूनानी शब्द का इस्तेमाल किया। वह शब्द (*politeuesthai*) है, जिसका सम्बन्ध ''politics'' (राजनीति) शब्द से है। इसका अर्थ है ''नागरिकों की तरह व्यवहार [करो]।'' ASV में मूल यूनानी धर्मशास्त्र पर एक नोट है: ''नागरिकों के योग्य व्यवहार करो। [3:20 से तुलना करें.]'' AB में है ''नागरिकों के रूप में केवल यह सुनिश्चित करो, ताकि तुम्हारा आचरण [यानी] जीवन का तुम्हारा ढंग मसीह के शुभ समाचार (सुसमाचार) के योग्य [हो]।'' पत्र में आगे पौलुस ने कहा कि ''हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है'' (3:20; देखें इफिसियों 2:19)। मॉफेट के फिलिप्पियों 3:20 के अनुवाद में ''हम स्वर्ग की एक बस्ती हैं'' है।

पौलुस की शब्दावली को समझने के लिए, याद रखें कि फिलिप्पी एक रोमी बस्ती थी (प्रेरितों 16:12)। ''हर रोमी बस्ती संसार भर की अलग-अलग जगहों पर बसा एक नन्हा रोम होता था। रोमी व्यक्ति, चाहे जहां भी रहे, यह कभी नहीं भूलता था कि वह रोमी है।''[7] वह ''लातीनी भाषा बोलता, लातीनी लिबास पहनता, ... मजिस्ट्रेटों को लातीनी नामों से बुलाता, चाहे [रोम से कितना भी दूर हो]।''[8] यानी पौलुस फिलिप्पियों से कह रहा था, ''तुम जानते हो कि रोमी नागरिकों के रूप में तुम्हारा आचरण कैसा होना चाहिए; अब सीख लो कि स्वर्गीय राज्य के नागरिकों के रूप में तुम्हारा आचरण कैसा हो चाहिए।'' रोम के नागरिक होना तुम्हें विशेष बना देता है, पर स्वर्ग के नागरिक होना तो तुम्हें *विलक्षण* बना देता है!''

स्वर्ग के नागरिकों के रूप में उनका आचरण कैसा होना चाहिए था? ''मसीह के सुसमाचार के योग्य'' उन्हें ऐसे व्यवहार करना था जिससे सुसमाचार को श्रेय मिले,[9] ऐसे जिससे सुसमाचार को सम्मान मिले (CEV)। ऐसे जिससे लोग सुसमाचार की ओर आकर्षित हों। पौलुस की शिक्षा पर विचार करते हुए मेरा ध्यान उन अमेरिकियों की ओर जाता है, जो हमारे ऑस्ट्रेलिया में रहते समय वहां आए थे। उनमें से अधिकतर लोग बहुत अच्छे थे, पर कुछ मेरे इलाके के बेचारे लोग थे। जब वे हमारी आराधना सभाओं में आते, तो वे ऑस्ट्रेलियाई भोजन तथा ऑस्ट्रेलियाई रीति रिवाज़ों पर शोर मचाते हुए शिकायत करते। मुझे बुरा लगता कि मेरे ऑस्ट्रेलियाई भाइयों और बहनों को यह पता चलेगा कि ये अतिथि अमेरिकी हैं। उनका व्यवहार ऐसा नहीं था जिससे उनके देश का सम्मान हो।

जीवन में आगे बढ़कर हमें निर्णय लेने होते हैं और समस्याओं को सुलझाना होता है। कई बार वचन में स्पष्ट होता है कि हमें क्या करना है; कई बार हमें वचन में सामान्य नियमों पर निर्भर रहना होता है। जीवन की चुनौतियों का सामना करते हुए ये प्रश्न हमें उत्तर ढूंढ़ने में सहायता कर सकते हैं: ''इस परिस्थिति में *स्वर्ग का नागरिक* क्या करेगा? स्वर्ग का नागरिक *कैसे काम करेगा?*'' यदि आप मसीही हैं तो मत भूलें कि आप विलक्षण हैं, क्योंकि आप परमेश्वर के राज्य के लोग हैं!

नियम में अटल बनें (1:27, 30)

फिलिप्पियों को यह अनुमान लगाने की आवश्यकता नहीं थी कि उनका चाल चलन

''सुसमाचार के योग्य'' कहते हुए पौलुस के मन में क्या था। उसने आगे कहा, ''कि चाहे मैं आकर तुम्हें देखूं, चाहे न भी आऊं, तुम्हारे विषय में यह सुनूं, कि तुम एक ही आत्मा में स्थिर हो'' (आयत 27ख, ग)। ''आत्मा'' का अनुवाद यूनानी शब्द के एक रूप *pneuma* के एक रूप से किया गया है। इसका संकेत पवित्र आत्मा के लिए हो सकता है; परन्तु, संदर्भ में यह मनुष्य की आत्मा के लिए लगता है। पौलुस ने ''एक चित ...'' वाक्यांश के साथ आगे कहना जारी रखा (आयत 27घ)। अनुवादित शब्द ''चित्त'' यूनानी भाषा के *psuche* (या *psyche*) का एक रूप है। प्रेरित को यह सुनने की आशा थी कि उसके पाठक सुसमाचार के विश्वास के लिए परिश्रम करते हुए ''स्थिर'' हैं। उसने इन भाइयों के पास फिर जाने की उम्मीद की (आयतें 25–27); वह जा पाया या नहीं, पर वह चाहता था कि वे प्रभु के वफ़ादार रहें।

अध्याय 1 के अंत से अध्याय 2 के आरम्भ में एक विषय ''एकता'' है। 1:27 में पौलुस ने तीन बार एकता की आवश्यकता पर ज़ोर दिया:

- वह अपने पाठकों को *व्यवहार* में एक यानी ''एक ही आत्मा में'' चाहता था।
- वह उन्हें *ध्यान* में एक अर्थात ''एक चित'' चाहता था।
- वह उन्हें *कार्य* में अर्थात ''मिलकर परिश्रम करना'' चाहता था।

एकता इतनी आवश्यक है! आयत 27 की शर्तों को पूरा करना आसान है, यदि हम उन्हें *दूसरों के साथ* करें। आयत में जहां ''परिश्रम करते रहते'' हैं,[10] वहां मूल धर्मशास्त्र को '' 'समान उद्देश्य में धावकों की तरह एक दूसरे से लड़ना' हो सकता है। यह तो ऐसा है जैसे पौलुस बाहर खड़ा होकर आग्रह कर रहा हो, 'देखते हैं कि टीमवर्क बढ़िया कैसे होता है!' ''[11]

हम अपने अगले अध्ययन में 2:2 तक जाने तक एकता की अपनी विस्तृत चर्चाओं को रोक लेंगे। अभी के लिए मैं 1:27 में इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूं कि संसार चाहे उसके लिए जो भी कहे, परमेश्वर की संतान *अटल* रहे। पौलुस ने फिलिप्पी में भाइयों को *स्थिर रहने* की शिक्षा दी (देखें 1 कुरिन्थियों 16:13; इफिसियों 6:11, 13, 14; 1 थिस्सलुनीकियों 3:8; 2 थिस्सलुनीकियों 2:15)।

हम जीवन और मृत्यु के आत्मिक युद्ध में लगे हुए हैं (देखें इफिसियों 6:10–17; 2 कुरिन्थियों 10:4)। पौलुस ने फिलिप्पियों को बताया कि उन्हें ''वैसी ही लड़ाइयां लड़नी हैं जैसी उन्होंने उसे लड़ते'' देखा था, जो वह ''अभी भी लड़ रहा'' था (फिलिप्पियों 1:30; CJB)। संसार में मसीहियत के लिए द्वेषपूर्ण माहौल ... ही रहा है।[12] आपके विश्वास पर आक्रमण हो सकता है। लोग आपके यकीन और मानदण्डों का मज़ाक उड़ा सकते हैं। शैतान आपकी कमज़ोरियों को जानता है और वह आपसे गलती करवाने के लिए आपको परीक्षा में डालेगा। कई बार जीवन बहुत बोझिल हो सकता है। इनमें से कोई भी बात होने पर पौलुस आपको प्रभु के निकट लाकर उसमें स्थिर करता है (फिलिप्पियों 4:1; देखें 1 पतरस 5:7)।

एक युद्धभूमि ''सुसमाचार का विश्वास'' है (फिलिप्पियों 1:27)। ''विश्वास'' यीशु में विश्वास पर केन्द्रित शिक्षा के समूह को यानी नये नियम को कहा गया है। सुसमाचार के विश्वास पर आक्रमण का खतरा बना रहता है। ऐसे भी लोग हैं जो इसे तुच्छ जानते, इसका अपमान करते हैं, जो इसका इनकार करते हैं और जो इसका विनाश करेंगे। आपको और मुझे इसे करने यानी,

इसे *जीने* इसकी घोषणा करने, इसकी सफ़ाई देने और यहां तक कि इसके लिए मरने को तैयार होना आवश्यक है! हमें ''उस विश्वास के लिए पूरा यत्न'' करने को तैयार रहना आवश्यक है ''जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था'' (यहूदा 3ख)।

सताव में बेख़ौफ (1:28-30)

हम अगर युद्ध कर रहे हैं तो विरोधी तो होंगे ही। पौलुस ने एक जगह ज़ोर दिया है कि हमारे आत्मिक विरोधी शैतान और उसके सहकर्मी हैं (इफिसियों 6:11, 12)। परन्तु आम तौर पर शैतान *लोगों* के द्वारा ही काम करता है (देखें मत्ती 16:23; यूहन्ना 6:70)।

पौलुस ने आगे कहा, ''किसी बात में विरोधियों से भय नहीं खाते'' (आयत 28क)। हम पक्का नहीं बता सकते कि ये ''विरोधी'' कौन थे; परन्तु आयत 30 में प्रेरित ने आगे कहा कि फिलिप्पी के मसीही लोगों पर ''वैसी ही परेशानी'' थी जैसी उस नगर में उस वक्त पड़ी थी और अब रोम में उस पर थी। फिलिप्पी के पौलुस के विरोधी उस नगर के लोगों द्वारा भड़काए गए सरकारी अधिकारी थे (देखें प्रेरितों 16:19-22)। रोम में उसके मुख्य विरोधी सरकारी अधिकारी थे, जिनके यहूदिया के प्रतिनिधियों को यरूशलेम के लोगों ने भड़काया था (देखें प्रेरितों 25:6-11)। फिलिप्पियों को मुख्य विरोधी सम्भवतया मूर्तिपूजक जनसंख्या और शायद छोटे से यहूदी समुदाय द्वारा प्रभावित होने वाले बेरहम सरकारी अधिकारी थे।

फिलिप्पियों के विरोधी जो भी थे, झगड़ा कई बार बहुत बढ़ गया होगा, क्योंकि पौलुस ने भाइयों को अपने शत्रुओं से ''भयभीत'' न होने को प्रोत्साहित किया। यूनानी शब्द का अनुवाद ''भय'' (*pturo* का एक रूप) ''डरना'' [या] आतंकित, घबरा जाना''[13] (''आतंकित; KJV ; ''भयभीत''; NIV)। ये शब्द ''मूल में'' भयभीत जानवर, विशेषकर शर्मीले घोड़े या अचम्भित झुंड की अनियंत्रित भगदड़ के लिए लागू होता था।[14] घोड़ों के झुंड की कल्पना करें, जो बिजली चमकने से हैरान हो कर घास के मैदान में से भाग रहा है।[15] यदि आपको मनुष्यों का उदाहरण पसन्द है, तो चेलों के गतसमनी के बाग में भागने पर विचार करें (मत्ती 26:56ख)। पौलुस ने अपने पाठकों से इस प्रकार न घबराने की विनती की। यीशु ने अपने चेलों को बताया, ''परन्तु मैं तुम से जो मेरे मित्र हो कहता हूं, कि जो शरीर को घात करते हैं परन्तु उसके पीछे और कुछ नहीं कर सकते, उन से मत डरो'' (लूका 12:4)। इब्रानियों 13:6 कहता है, ''इसलिए हम बेधड़क होकर कहते हैं, कि प्रभु, मेरा सहायक है; मैं न डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?''

फिलिप्पियों को अपने विश्वास के लिए कष्ट उठाने पर उन्हें ''भागने'' से रोकने में किस बात ने सहायता करनी थी? पौलुस ने उनके दृष्टिकोण में सहायता के लिए तीन सच्चाइयां बताईं। पहले उनका कष्ट इस बात का संकेत था कि वे परमेश्वर को स्वीकार हैं: ''किसी बात में विरोधियों से भय नहीं खाते? यह उन के लिए विनाश का स्पष्ट चिह्न[16] है, परन्तु तुम्हारे लिए उद्धार का, और यह परमेश्वर की ओर से है'' (आयत 28)। फिलिप्पियों ने सताव को इस ''चिह्न'' के रूप में देखा होगा कि वे कमज़ोर हैं और उनके विरोधी मज़बूत, परन्तु प्रेरित के कहने का अर्थ था कि ''नहीं, यह तो इस बात का चिह्न है कि तुम उद्धार के मार्ग पर चल रहे हो!'' कष्ट ही अकेला इस बात का प्रमाण नहीं है कि परमेश्वर ने किसी को स्वीकार कर लिया है, परन्तु यदि आपको मसीही होने के कारण कष्ट मिलता है तो आप कुछ तो सही कर रहे हैं!

इससे तसल्ली मिल सकती है क्योंकि ''यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो क्या कोई हमारे विरोध में हो सकता है?'' (रोमियों 8:31; CEV)।

उसने यह भी कहा कि उनका सताव उनके लिए जो विरोध करते हैं ''विनाश का चिह्न'' था। क्या उनके शत्रुओं को मालूम था कि मसीह की कलीसिया को नाश करने के उनके प्रयास ''विनाश का चिह्न'' थे? सम्भवतया नहीं। फिलिप्पियों 1:28 में NASB में जहां ''उनके लिए'' है वहां यूनानी शब्द का अनुवाद ''उन्हें'' भी हो सकता है। (देखें KJV और NIV)। इससे इस चर्चा को हवा मिली है कि मसीही लोगों का सवाल किस प्रकार से अविश्वासियों के लिए ''चिह्न'' हो सकता है। शायद यह तथ्य कि मसीही लोग सताव के बावजूद बदले नहीं उनके कुछ विरोधियों को रुककर यह सोचने के लिए मजबूर करता होगा कि वे सही हैं या गलत। अधिक सम्भावना यही है कि फिलिप्पियों को सताने वालों ने मसीही लोगों के विरुद्ध अपनी सफलता को इस ''चिह्न'' के रूप में देखा कि वे सही हैं और यीशु के पीछे चलने वाले गलत। तौ भी हर दिन के बीतने पर वे अनन्त विनाश के एक कदम और निकट बढ़ जाते थे। ''कलीसिया और सुसमाचार का लगातार विरोध अन्त में विनाश का पक्का चिह्न है, क्योंकि इसमें उद्धार के एकमात्र मार्ग को ठुकराना शामिल है।''[17] पौलुस फिलिप्पियों को बताना चाहता था कि उनकी समस्याएं ''परमेश्वर की ओर से प्रमाण हैं कि तुम्हारा उद्धार होगा और तुम्हारे शत्रु नाश हो जाएंगे'' (NCV)

कष्ट पर फिलिप्पियों के दृष्टिकोण पर सहायता देने के लिए पौलुस की दूसरी सच्चाई यह थी कि प्रभु के लिए दुख उठाना सौभाग्य की बात है: ''क्योंकि मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ है कि न केवल उस पर विश्वास करो पर उसके लिए दुख भी उठाओ'' (आयत 29)। ''अनुग्रह'' के लिए यूनानी शब्द (*charizomai* का एक रूप) है जो (*charis*) का मूल है। इसका अर्थ ''निशुल्क समर्थन देना ...'' है।[18] आयत 29 प्रभु द्वारा हमें दिए जाने वाले दो दानों की बात करती है। एक तो विश्वास करने का दान है। प्रभु हमें विश्वास इस अर्थ में ''देता है'' कि उसने हमें बाइबल दे दी, जो विश्वास दिलाती है (रोमियों 10:17) और इसकी सच्चाइयों को समझने के योग्य बनाती है (इफिसियों 5:17)। विश्वास के दान के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें! विश्वास के द्वारा हम परमेश्वर के अनुग्रह को पाते हैं (इफिसियों 2:8, 9) और प्रतिदिन जीवित रहते हैं। विश्वास उन ''उत्तम'' दानों में से एक है, जो ''ऊपर ही से'' मिलते हैं (याकूब 1:17)।

आयत 29 में दिया गया दूसरा दान मसीह की खातिर दुख उठाने का सम्मान है। इसे ''अवांछित दान'' कहा गया है। मैं उपहारों से भरे एक मेज़ को देखने की कल्पना करता हूं जिसमें प्रभु अपनी आशीष देता है। लोगों को यदि अपनी मर्ज़ी के अनुसार उठाने की अनुमति दी जाए तो मेज़ पर रह गया अन्तिम दान सम्भवतया दुख उठाने का दान ही होगा। चार्ल्स स्विन्डल ने ''मसीही जीवन के 'सुखमयी भाग' को विश्वास करना और कठिन भाग'' को दुख उठाना कहा है।[19]

तौभी बाइबल बताती है कि दुख उठाना मसीही अनुभव का भाग है और दुख उठाने का अपना महत्व है (देखें यूहन्ना 16:33; प्रेरितों 5:41; 14:22; रोमियों 5:3–5; 2 थिस्सलुनीकियों 1:4, 5; इब्रानियों 12:5–7, 11; याकूब 1:2–4; 1 पतरस 3:14; 4:12–14)। दुख उठाना जब

विश्वास से हो तो यह मसीही लोगों के रूप में उन्नति करने में हमारा सहायक होता है।

परन्तु इस बात को समझें कि आशीष अपने आप में दुख उठाना नहीं है, बल्कि यीशु की खातिर यानी ''उसके लिए'' दुख उठाना है। पतरस ने लिखा, ''तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर, या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ डालने के कारण दुख न पाए। पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिए परमेश्वर की महिमा करे'' (1 पतरस 4:15, 16)। प्रभु के लिए दुख उठाना सौभाग्य की बात है। यीशु ने कहा:

> धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
>
> धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल-बोल कर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें कहें। आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है (मत्ती 5:10-12क)।

दुख के बारे में फिलिप्पियों के बारे में दुख को तीखा करने के लिए तीसरी सच्चाई जो पौलुस ने बताई, वह यह थी कि दुख उठाते समय उनके साथ अच्छी संगति थी: ''तुम्हें वैसा ही परिश्रम करना है, जैसा तुम ने मुझे करते देखा है, और अब भी सुनते हो'' (फिलिप्पियों 1:30)। अनुवादित शब्द ''परिश्रम'' (*agon* का एक रूप) वही यूनानी शब्द है जिससे हमें ''कष्ट'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''*agony*'' मिला है। इसका इस्तेमाल रंगभूमि में दंगल करने वाले द्वारा भयंकर लड़ाइयों का वर्णन करने के लिए किया जाता था।[20] आयत 30 में दिए शब्द फिलिप्पी मसीहियों के मन में फिलिप्पी में पौलुस के साथ हुई बातें ताज़ा कर दी होंगी। (क्या आप दारोगे के चेहरे पर परेशानी को देख सकते हैं?) अब वे वैसा ही संघर्ष कर रहे थे। पौलुस उन्हें बताना चाहता था कि वे अकेले नहीं हैं और वह इस बात को समझता है।

2 तीमुथियुस में पौलुस ने लिखा ''जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए *जाएंगे*'' (3:12)। आपके साथ ऐसा होने पर तीन सच्चाइयों से आपको तसल्ली मिल सकती है और यह आपको सामर्थ देती है।

- इस बात का संकेत है कि आपको परमेश्वर ने स्वीकार कर लिया है।
- प्रभु के लिए दुख सहना एक सौभाग्य है।
- जब आप धार्मिकता की खातिर दुख सहते हैं तो आप अच्छी संगति में है (मत्ती 5:12ख)।

सारांश

हम '''केवल' उस बात की जो मसीह को करनी है'' चर्चा कर रहे हैं। यदि आप आसानी से पूरी होने वाली एकमात्र शर्त को ढूंढ़ने की आशा में थे तो सम्भवतया आप निराश होंगे; क्योंकि हमने कई प्रकार की जिम्मेदारियों की बात की है। परन्तु उम्मीद है कि इस विचार से आपको सहायता मिलेगी: ''मसीही के रूप में मुझे एक बात करनी है और वह स्वर्ग के राज्य के नागरिक *के रूप में काम करना* है!''

यदि हम यह समझ सकते हैं कि हम स्वर्गीय राज्य के लोग हैं तो हमें फिलिप्पियों 1:27-30 की ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में सहायता मिलेगी:

- अधिकतर नागरिक अपनी नागरिकता पर गर्व करते हैं। स्वर्ग के नागरिकों के रूप में हमें अपनी विलक्षणता को समझना चाहिए और इस प्रकार से जीना चाहिए जिससे हमारे ''स्वदेश'' की झलक मिलती हो।
- नागरिक उसका भाग हैं जो उनसे बड़ा है; इकट्ठे मिलकर वे अपने विरोधियों का सामना कर सकते हैं। स्वर्ग के नागरिकों के रूप में हम एक-दूसरे का समर्थन करते हैं; इस प्रकार हम आने वाली हर बाधा में दृढ़ रह सकते हैं।
- इकट्ठे मिलकर नागरिकों को हिम्मत मिलती है। अगले संसार के नागरिकों के रूप में हम इस संसार से घबराते नहीं हैं। इसके बजाय ''इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया, है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं'' (रोमियों 8:37)।

फिलिप्पियों 2:1-4 पर ''इकट्ठे हैं तो खड़े हैं'' पाठ में हम इस पर चर्चा जारी रखेंगे कि स्वर्ग के राज्य के नागरिक को आचरण कैसा करना चाहिए।

टिप्पणियां

[1]विलियम एफ़. अर्डंट एंड एफ़. विल्बर गिंगरिंच, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर* (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957), 529. अन्य मानद अनुवादों में *monon* का अनुवाद ''केवल'' (KJV; NKJV; ASV; NASB; RSV; NRSV; CJB) है, परन्तु कुछ एक में इसका अनुवाद करने के बजाय इसकी व्याख्या कर दी गई है (NIV; NCV)। [2]गैर्लड एफ़. हाथोर्न, *वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री,* अंक 43, *फिलिप्पियंस* संपा. डेविड ए. हब्बर्ड एंड ग्लेन डब्ल्यू. बार्कर (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1983), 54. [3]वही, 55. [4]विलियम बार्कले, *द लैटर टू द फिलिप्पियंस, कोलोशियंस एंड थेस्लोनियंस* संशो. संस्क., दि डेयली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 29. [5]एलेस मोटियार, *द मैसेज ऑफ़ फिलिप्पियंस: जीज़स अवर जॉय,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़, संपा. जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस , 1984), 92. [6]चार्ल्स आर. अर्डमैंस, *दि एपिस्टल ऑफ़ पॉल टू दि फिलिप्पियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1983), 71. [7]मैक्सी डी डन्नम, *गलेशियंस, इफिशियंस, फिलिप्पियंस कोलोशियंस, फिलेमोन,* दि कम्युनिकेटर'स कमैंट्री संपा. लायड जे ओग्लिव (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1982), 272. [8]बार्कले, 30. [9]यूजीन एच. पीटरसन, *द मैसेज: न्यू टैस्टामेंट विद साम्स एंड प्रोवर्ब्स* (कोलोराडो स्प्रिंग्स: नवप्रैस, 1995), 490. [10]यूनानी भाषा में यह वाक्यांश मिश्रित शब्द *sunathleo* का एक रूप है जो पूर्व सर्ग *sun* (''के साथ'') *athleo* को मिलाता है जिससे हमें अंग्रेज़ी शब्द ''एथलीट'' और ''एथलेटिक'' मिले हैं। इस शब्द का अर्थ ''संघर्ष करना है जैसे एथलीट या धावक संघर्ष करता है।'' (*दि अनेलेटिकल ग्रीक लैक्सिकन* [लंदन: शमुएल बैगस्टर एंड सन्स, लिमिटेड, 1971], 8, 385).

[11]एवन मेलोन, *प्रैस टू द प्राइज़* (नैशविल्ले: ट्वंटियथ सेंचुरी क्रिश्चियन, 1991), 45. [12]जेम्स, बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन गलेशियंस, इफिशियंस, फिलिप्पियंस, कोलोशियंस* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1977), 273. मसीही लोग जो ऐसे माहौल में रहते हैं जो सुसमाचार के विरुद्ध हो सचमुच में पौलुस की शिक्षा को समझते हैं। [13]अर्डंट एंड गिंगरिच, 735. [14]जॉन ए. नाइट, *फिलिप्पियंस, कोलोशियंस, फिलोमोन,* बीकन बाइबल एक्सपोज़िशन (कैन्सास सिटी, मिज़ोरी: बीकन हिल प्रैस, 1985), 57. [15]आपके सुनने वाले अन्य बड़े पशुओं से अधिक परिचित होंगे जो कई बार भगदड़ मचाते हैं। यदि ऐसा है तो इस उदाहरण में उन जानवरों की बात करें। [16]यूनानी शब्द, *endeixex* ''का मूल अर्थ 'इशारा करना' है। ... इसका *अर्थ* 'प्रदर्शन या

प्रमाण' हो गया।'' (जेम्स एम. टोल्ले, *नोट्स ऑन फिलिप्पियंस* [सैन फर्नेंडो, कैलिफोर्निया: टोल्ले पब्लिकेशंस, 1972], 24)। [17]रिचर्ड बी. गफिन, जूनि., नोट्स ऑन फिलिप्पियंस, द *NIV स्टडी बाइबल,* संपा. केन्नथ बार्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 1804. [18]*दि अनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स लिमिटेड, 1971), 433-34. [19]चार्ल्स आर. स्विन्डल, *लाफ़ अगेन* (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1992), 72. [20]*अनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन,* 6; मेलोन, 47.